रिकॉर्ड :– हमारे तीर्थ न्यारे हैं..... "ॐ" पिताश्री 26/10/1965
ओम् शान्ति। बच्चों ने गीत सुना कि हमारे तीर्थ न्यारे हैं। हमारे तीर्थ बहुत दूर हैं। इसलिए बच्चों को कहा जाता है कि दूरांदेशी भव। दूर देश के रहने वाले हो। फिर कहते हैं विशाल बुद्धि भव। सबकी बुद्धि तुच्छ है ना। माया ने तुच्छ बुद्धि बना दिया है। तो बच्चों की दूरांदेशी बुद्धि अर्थात् दूर के रहवासी की याद और विशाल बुद्धि अर्थात् सारी सृष्टि के आदि–मध्य–अंत का ज्ञान बुद्धि में है। सब हैं अल्पज्ञ बुद्धि। अल्प बुद्धि अर्थात् सिर्फ परमात्मा–2 कहते; परन्तु जानते नहीं। यहाँ कोई महात्मा नहीं हैं। यह तो बाप आए दूरांदेशी बनाते हैं; परन्तु दूरांदेशी बहुत कम हैं। भले ही ज्ञान है; परन्तु दूरांदेशी कम हैं अर्थात बाप की याद कम है। बाकी साधु तो साधना करते हैं तो ज़रूर पतित हैं ना। यह तो सारी दुनिया पतित है। यथा राजा–रानी तथा प्रजा सब पतित हैं। भले ही महान आत्मा नाम डाल देते हैं; परन्तु महान आत्मा कोई है नहीं। कई कृष्ण को भी महात्मा कहते हैं। यह तो फिर भी राइट है; क्योंकि वहाँ श्रेष्टाचारी दुनिया है। यह तो है भ्रष्टाचारी दुनिया। तो यथा राजा–रानी... राजा–रानी तो कोई है नहीं। प्रजा का प्रजा पर राज्य है। तो साधु माना साधना करने वाले। तो पतित हैं ना। नाम रखाते हैं शास्त्री। शास्त्री अर्थात् शास्त्र पढ़ा हुआ। तो बाप कहते हैं शास्त्र पढ़ने से तुम मेरे से नहीं मिल सकते, जब तक मेरे द्वारा मेरे को ना जानो और ना ही कोई मुक्ति में जा सकते, जब तक कल्प की अन्त में मैं ना आऊँ। मनुष्य तो कृष्ण को याद करते हैं। वह तो इस देश का है। दूरांदेशी तो वह है नहीं। तो बाप को याद करना माना दूरांदेशी बनना। मनमनाभव का अर्थ ही है दूरांदेशी भव। जो बाप को जानते ही नहीं तो बाप से वर्सा मिले भी कैसे! अगर आवे नहीं तो रास्ता कैसे बतावें! बड़ी समझ की बात है। साजन साथ बड़ा लव चाहिए। कहते हैं ना, एक मिला तो सब कुछ मिला। तो एक से ही सर्व प्राप्तियाँ हो जाती हैं। ऐसे साजन साथ तो बहुत लव होना चाहिए। और कोई तकलीफ नहीं है। यह है बेहद की नॉलेज विराट ड्रामा की। विराट ड्रामा अर्थात् वैराइटी, जिसमें अनेक मतभेद है। तभी कहते हैं द्वैत राज्य। द्वैत कहो वा दैत्य कहो, एक ही बात है। दैत्य रावण को कहा जाता है ना। तो दैत्य को देवता बनाने वाला तो एक ही बाप है। कहते हैं मनुष्य से देवता किए... तो कितनी सहज बातें हैं। तुम हो विशाल बुद्धि। शास्त्र पढ़ने वाले को विशाल बुद्धि नहीं कहेंगे। वह तो है भक्ति। ज्ञान अलग चीज़ है, भक्ति अलग चीज़ है। ज्ञान तो ज्ञान सागर बाप ही आकर देते हैं। ज्ञान से होती है सद्गति। भक्ति से दुर्गति होती है। दुर्गति कौन करता है? अपन को समझते भी हैं कि दुर्गति में हैं; परन्तु समझते नहीं हैं कि दुर्गति कब, कितना समय चलती, यह नहीं जानते। इसको कहा जाता अल्पज्ञ बुद्धि अर्थात् कुछ नहीं जानते। इसको कौड़ी जैसा जन्म कहा जाता। तभी तो कौड़ी जैसा जन्म और हीरे जैसा जन्म गाया जाता है। तो हीरे जैसे थे, अब कौड़ी जैसे बने हैं। अब बाप हीरे जैसा बनाते हैं। विशाल बुद्धि होने से सारे विश्व पर राज्य करते हैं। वहाँ पर अचल, अखण्ड राज्य है। तो दूरांदेशी, विशाल बुद्धि ज्ञानमार्ग में होते हैं। जानते हो बरोबर, सतयुग में तो सुख है। फिर धीरे–2 नीचे उतरना ही है। सीढ़ी उतरनी ही है। चढ़ने में एक सेकण्ड। यह है जम्प (छलाँग लगाना)। तो यह है पतित से पावन बनने की जम्प। तो उतरने में 5000 वर्ष लगता है। तो तुम जानते हो ना। तो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार दूरांदेशी विशाल बुद्धि बने हो। यह ज्ञान इस समय ही मिलता है। सतयुग में तो ज्ञान रहता नहीं। संगमयुग कहा ही तब जाता है, जब बाप आते हैं। संगमयुग पर बाप आए हैं हूबहू कल्प पहले मुआफिक। सतयुग में तुमको विशाल बुद्धि नहीं कहेंगे। हीरे जैसा जन्म सतयुग में नहीं कहेंगे। हीरे जैसा जन्म इस समय है; क्योंकि इस समय तुम ईश्वरीय सन्तान हो। ईश्वर पढ़ाते हैं। गीता में तो कृष्ण का नाम डाल दिया है। उनको तो पतित–पावन कह ना सके। बाप की महिमा ही है पतित–पावन। जबकि परमात्मा पतित–पावन है तो सर्व

व्यापी कैसे हो सकता! तो मनुष्य अल्प बुद्धि है ना। कितना भी समझाओ, समझते नहीं; क्योंकि ब्राह्मण कुल के नहीं हैं। जो देवता कुल के होंगे वह ही ज्ञान को समझ ब्राह्मण बनेंगे। बाप ज्ञान का सागर है, तुम भी ज्ञान के सागर बनते हो। फिर तुम सुख के सागर बनते हैं। सतयुग में सुख अपार रहता है ना और शान्ति के सागर भी बनते हो। तो बाप द्वारा तुमको सर्व सुख प्राप्त होते हैं, सो भी तुम अन्त में ज्ञान के, सुख–शान्ति के सागर बनेंगे; क्योंकि औरों को भी तो देते हो ना। अभी तो देखो कितनी अशान्ति है। बड़ों–2 को नींद थोड़े ही आती है और तुमको अब खुशी रहनी चाहिए; क्योंकि बाप को जानते हो। दुनिया तो कहती ओ गॉड फादर, प०पि०प० और जानते हैं नहीं। तो यह भक्ति हो गई। कितना समय से भक्त याद करते हैं? द्वापरयुग से। कहते हैं ना– देवताएँ वाममार्ग में गए। कब गए? जानते नहीं। बाप अपना और रचना का परिचय खुद आकर देते हैं। तो तुमको भी देना है। बच्चे जानते हैं यह बाप है। यहाँ कोई महात्मा नहीं है। बाबा को ख्याल आया कि लिखा हुआ है, आप किस अभिप्राय से आए हैं? तो इससे पहले लिखा हुआ हो किससे मिलने आए हो? तो कहेंगे, महात्मा से। तो बोलो, यहाँ महात्मा तो कोई है नहीं। नाम ही है बी०के०, तो इनका बाप प्रजापिता ब्रह्मा होगा ना। तो महात्मा तो हुआ नहीं। तो आरग्यू करने वाला बड़ा अच्छा चाहिए, बुद्धिवान चाहिए। समझो, वह लिखकर भी जाते हैं; परन्तु समझते कुछ हैं नहीं। बिल्कुल बुद्धू हैं। शक्ल से मालूम पड़ जाता है। बाप खुद कहते हैं यह बुद्धू है। बुद्धि में ज्ञान है नहीं। शिवबाबा तो जानता है ना। अन्तर्यामी है। यह बाबा तो बाहरयामी है। शिवबाबा ब्रह्मा तन में आते हैं ना। बाप कहते हैं मैं आता ही उस तन में हूँ जो पहले नम्बर का है, फिर अभी लास्ट में है। इसमें ही प्रवेश करता हूँ; क्योंकि इनको फिर वो ही नारायण बनना है। तो इनको इस तन (देने) की अथवा किराए की लिफ्ट मिलती है। तभी कहते हैं भाग्यशाली रथ। भागीरथ ने कोई पानी की गंगा नहीं लाई। यह ज्ञान की बात है। यह ज्ञान बड़ा गुह्य है। शास्त्रों में तो लिखा है कलियुग 40 हज़ार वर्ष का है। कहाँ 5000 वर्ष का चक्र, कहाँ कलियुग 40 हज़ार वर्ष का लिख दिया है। तो हैं ना तुच्छ बुद्धि। समझते हैं नहीं। कहते हैं, यह किस शास्त्र में लिखा है कल्प 5000 वर्ष का है। शास्त्रों में लिखा नहीं है। शास्त्र तो है ही भक्तिमार्ग के। है ही रावण राज्य। तो रावण मत पर होने कारण समझते नहीं हैं। जब तुमने समझा है तो औरों को समझाने की युक्ति निकालो। अब देखो, यह शास्त्री (कानपुर से आया है) है। इनको ख्याल आना चाहिए कि औरों को कैसे दूरांदेशी बनावें, कैसे बाप का परिचय दें। वह तो ब्रह्म को याद करते हैं। ब्रह्म तो तत्व है ना, जहाँ पर परमात्मा रहते हैं; परन्तु वह ब्रह्म को ही परमात्मा समझ लेते। जैसे हिन्दू कोई धर्म है नहीं। हिन्दुस्तान में रहने कारण हिन्दू नाम रख देते हैं। वास्तव में हिन्दुस्तान तो रहने का स्थान है। तो ब्रह्म तत्व भी परमात्मा के रहने का स्थान है। मनुष्य समझते नहीं तो अल्प बुद्धि हैं ना। यह तो यह ज्ञान की बात है ना। दुनियावी बातों को तो सब जानते हैं। यह खुद जवाहरी था तो जानता था ना, बाकी ज्ञान की बातों में अल्प बुद्धि थे। कुछ नहीं जानते थे। तो फिर बाप ही आए पहचान देते हैं। जब तक कोई ब्राह्मण ना बने तब तक बाप से वर्सा ले ना सके। हाँ, प्रजा तो बननी है। किसी ने थोड़ा भी ज्ञान सुना तो प्रजा तो बन गई। भल ही विकार में भी जाता रहे। तो उनको सज़ा भोगनी पड़ेगी। फिर भी एकदम पिछाड़ी में साधारण प्रजा बनेंगे। अभी तो सबका मौत है। कब्रदाखिल होना ही है। इस समय तो मनुष्यों की कोई वैल्यु है नहीं। तुम्हारी भी नहीं थी। बन्दर थे। अब वैल्युएबुल बन रहे हैं। बाकी जब विनाश होगा तो सभी मच्छरों मुआफिक मरेंगे। जैसे दिवाली पर मच्छर कितने मरते हैं। तो सबको मरना तो है ही; क्योंकि सबको वापिस जाना है। सतयुग में यह नहीं कहते कि मरा; क्योंकि वहाँ अकाले मृत्यु होता नहीं। काल पर

जीत पहनते हो। वहाँ मरना शब्द होता ही नहीं। जैसे कि जीते जी। जीते जी भी दो प्रकार का हो गया जैसे मम्मा जीते जी है। फिर सतयुग में जानते हैं कि हम मरते नहीं हैं, सिर्फ एक पुराना चोला छोड़ते नया लेते हैं, सो भी समय पर। सर्प का मिसाल है कि पुरानी खल छोड़ नई लेता है। तो सर्प का मिसाल भी सतयुग में लगता है, यहाँ से नहीं; क्योंकि यहाँ पर तो हम नई खल नहीं लेते। भ्रमरी का मिसाल अभी का है। सन्यासी फिर यह मिसाल देते हैं; क्योंकि अभी का यादगार भक्तिमार्ग में चलता है। तो कुछ तो शास्त्रों में लिखा जाता, कुछ यह कॉपी कर लेते। भ्रमरी का भी मिसाल देते हैं। वास्तव में वह दे ना सके। वह तो और ही परिस्तान से जंगलस्तान में जाते हैं। देखो, राजाएँ पहले घर में रहते फिर सन्यास कर लेते। अभी तुम जितनी–2 धारणा करेंगे, विशाल बुद्धि होंगे, उतनी कमाई करेंगे। जैसे सर्जन जितना विशाल बुद्धि होते हैं, जितनी दवाइयाँ बुद्धि में अधिक रखते, उतनी कमाई करते हैं। तो यहाँ भी ऐसे हैं। सर्जन हैं, एल०एल०बी० हैं; परन्तु कोई तो 25 हज़ार भी कमाते, कोई राजा को ठीक कर दिया तो लाख–2 भी दे देते, कोई तो थोड़ा सा कमाते हैं। यहाँ भी ऐसे हैं, कोई को तो ज्ञान की प्वाइंट्स धारणा नहीं और कोई तो बड़े दूरांदेशी विशाल बुद्धि हैं। औरों को भी बनाते हैं। पहले दूरांदेश, पीछे विशाल बुद्धि कहेंगे। समझने की बात है ना। ब्राह्मण जैसे सौभाग्यशाली कोई है नहीं कि एकदम सबको ऊपर ले जाते हो। ऊपर में परमात्मा है ना। तो उसका परिचय देते हो। तो तुम जाडू (जानकार) हो ना। बच्चों को बाप की जानकारी तो होती ही है। यह पारलौकिक, वह लौकिक। लौकिक बाप तो काम कटारी नीचे डाल देते तब तो पारलौकिक बाप को याद करते हैं। अब बाप आए हैं लेने; क्योंकि 84 का चक्कर पूरा हुआ है। तो साजन आया है लेने लिए। . ..... की बच्ची की कहानी है ना कि राजा ले आया तो बच्ची को अच्छा ना लगा तो वापिस भेज दिया। यहाँ भी ऐसे हैं, जिनकी बुद्धि में ज्ञान की धारणा नहीं होती तो वह खुद ही चली जाती। इसमें बाप क्या करें! समझाने वाला है प०पि०प० ब्रह्मा द्वारा। वेदों–शास्त्रों का सार बताते हैं कि वेद–शास्त्र कोई धर्म शास्त्र है नहीं। यह तो पत्ते हैं, बाल बच्चे हैं। मुख्य धर्म हैं 5, उसमें भी ब्राह्मण धर्म उत्तम है। हीरे जैसा जन्म देवताओं का नहीं कहेंगे, ब्राह्मणों का कहेंगे; क्योंकि यह लीप, धर्माऊ, कल्याणकारी युग। लीप मास को धर्माऊ मास कहते हैं। यह है संगमयुग कल्याणकारी। और जितने भी संगमयुग है वहाँ तो अकल्याण होता है; क्योंकि डिगरी कम होती जाती है। दिन–प्रतिदिन कला कमती होती जाती है। तो यह युग ही कल्याणकारी है। तो हरेक को माथा मारना पड़े कि (कैसे) औरों को समझावे। यूँ तो उस्ताद बता ही रहे हैं कि कैसे रास्ता बताओ। फिर भी हरेक का धंधा अपना है। तो यह आना चाहिए कैसे औरों को दलदल से निकाले। कई तो दलदल से निकालते जाते, खुद फँस मरते। तो समझाने की बड़ी युक्ति चाहिए। पहले अल्फ को जान जावे तो बे बादशाही को भी जान जावे, सृष्टि–चक्र को जान जावे। पहले अल्फ को तो जाने। कोई (जब) हज़ार दफा लिख कर देवे कि अल्फ कौन है तब यहाँ बैठ सके। कई तो बल्ड से भी (लिख)कर देते हैं फिर चले जाते। माया कोई कम थोड़े ही है। अच्छा, मीठे–2, सिकीलधे, दूरांदेशी, विशाल बुद्धि, स्वदर्शनचक्रधारी बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग। ऊँ।

(स)भी तो सच्चे–2 नूर महल में चलते हैं। यह नूर महल थोड़े ही है। यह तो अंधा महल है। यह संगम तो नूर महल से भी अच्छा है; क्योंकि ब्राह्मण चोटी है ना। बाजोली (खे)लते हैं तो चोटी पहले हैं। विराट रूप में भी ब्राह्मण चोटी पहले रखा है। यह समझ की बात है। ..... ब्राह्मण वृद्धि को पाते रहते हैं। नए–2 आते रहते हैं ना। तो प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे तो दैवी पद पा रहे हैं। बच्चे 5000 वर्ष बाद फिर से आए मिले हैं वर्सा पाने लिए। फिर रावण आता है तो (आधा) कल्प उसका राज्य चलता है। अभी तो रावण राज्य खलास होता है, फिर तो दीपमाला ही (दीप)माला है। अच्छा, यादप्यार। ऊँ।